10

लैंगिक संवेदनशीलता की दृष्टि से भोपाल के सहशिक्षा मदरसों का शोध अध्ययन

सुषमा जयरथ*

ख़दीजा सिद्दीकी**

यह लेख भोपाल ज़िले के सहशिक्षा मदरसों पर आधारित है, जिन्हें मध्य प्रदेश राज्य के मदरसा बोर्ड से मान्यता प्राप्त है। ये मदरसे सर्वशिक्षा अभियान से भी जुड़े हुए हैं। प्रस्तुत लेख के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयत्न किया जा रहा है कि भोपाल के सहशिक्षा मदरसे और उनके पाठ्यक्रम की लैंगिक दृष्टि से वर्तमान स्थिति क्या है। साथ ही इन मदरसों के छात्र और छात्राओं की लैंगिक संवेदनशीलता के संदर्भ में सोच एवं विचारों का अध्ययन कर विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

परिचय

मक़तब मदरसों के पाठ्यक्रमों का यह शोध अध्ययन मुख्यतः लैंगिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है, जिसके मुख्य उद्देश्यों में मक़तब और मदरसों में पढ़ने वाले छात्र/छात्राओं के नामांकन, मक़तब और मदरसे की स्थिति, लडके एवं लड़कियों के शिक्षा त्यागने (ड्रॉपआउट) के कारण, अध्यापकों, छात्र तथा छात्राओं के बीच अंतःक्रियाओं को जानना, तथा पाठ्यक्रम का विश्लेषण करना आदि सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त सभी पणधारियों (स्टेकहोल्डर्स) की लैंगिक दृष्टि से सोच एवं अभिवृत्ति को समझना भी शामिल है। मदरसों के धार्मिक पाठ्यक्रम को जानना और मुस्लिम लड़कियों की लैंगिक समानता तथा उनके सशक्तिकरण के संबंध में जानना कि ये मदरसे उनके उत्थान और विकास के लिए क्या कर रहे हैं, भी इस शोध में शामिल है, जो कि इस लेख के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

अनुसंधान तकनीकः-

प्रस्तुत शोधकार्य प्राथमिक स्रोत के गुणात्मक और मात्रात्मक आँकड़ों का मिश्रण है। शोधकार्य करते समय विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं तथा स्तरों पर आधारित लैंगिक दृष्टिकोण से मदरसों का सर्वेक्षण किया गया तथा विभिन्न पणधारियों (स्टेकहोल्डर्स) की सोच को जानने का प्रयत्न किया गया। इसलिए मध्य प्रदेश मदरसा बोर्ड से संबंधित एवं सर्वशिक्षा अभियान से जुड़े जिन 6 मदरसों का इस शोध अध्ययन के द्वारा नीचे विवरण दिया जा रहा है, वे सभी मदरसे प्रारंभिक स्तर कक्षा 8 तक हैं एवं इस प्रकार हैं–

* प्रोफ़ेसर एवं मुख्य निरीक्षक, महिला अध्ययन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

** कनिष्ठ परियोजना अध्येता, महिला अध्ययन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

क्र.सं.	मदरसों का नाम	पता
1	मदरसा रहमानिया	नवाब कॉलोनी, वार्ड नं॰ 66, भोपाल
2	मदरसा नैसेन्ट दीनियात	म.नं॰ 38, श्रमदान रोड, पुल पातरा, बरखेड़ी, भोपाल
3	बुष्टारा दारूल उलूम	आरिफ नगर, गली नं॰8, भोपाल
4	मदरसा तालीमुल कुरआन	53, चटाई पुरा, बुधवारा, भोपाल
5	मदरसा दीनियात फ़देहा	793, इन्दिरा नगर, टील जम्पल पुरा रोड, भोपाल
6	फ़लाह दारैन दारूल उलूम	ऐशबाग स्टेडियम, भोपाल

उपरोक्त मदरसों में अंतक्रिया, विवेचन तथा अवलोकन के लिए विभिन्न प्रकार की प्रश्नावली सूचियों का प्रयोग किया गया। ये सूचियाँ सभी पणधाारियों जैसे छात्र/छात्राओं से लेकर शिक्षकों, मुख्य शिक्षकों तथा सामुदायिक प्रबंधकों तक के लिए बनाई गई, परंतु इस लेख में केवल छात्र/छात्राओं की प्रश्नावली सूचियों का ही विवरण दिया जा रहा है।

साहित्य पुनरावलोकन -

यद्यपि मदरसों पर पहले भी विभिन्न शोध कर्त्ताओं, जैसे- योगिंदर सिकंद, एम. शोएब अंसारी, असगर अली इंजीनियर तथा एम. अख्तर सिद्दीकी द्वारा शोधकार्य किया जा चुका है, परंतु मदरसों के संदर्भ में लैंगिक दृष्टिकोण एवं लैंगिक संवेदनशीलता की दृष्टि से अब तक कुछ अधिक कार्य नहीं हुआ है। फ्राँस मैरी जूले विंकलमैन ने दिल्ली के एक लड़कियों के मदरसे पर अपना शोधकार्य किया है। इसके द्वारा विंकलमैन ने यह समझाने की कोशिश की है कि मदरसों में लड़कियों को किस प्रकार की शिक्षा दी जाती है तथा लड़कियाँ शिक्षा ग्रहण करने के बाद इस्लाम की किस प्रकार व्याख्या करती हैं। अब कुछ शोधकर्त्ता इस संबंध में कार्य करने के लिए जागरूक हो रहे हैं।

मदरसों की स्थापना तथा छात्रों के नामांकन के संबंध में -

यद्यपि भोपाल में अधिकतर सहशिक्षा मदरसों की स्थापना 1995 के बाद हुई है, परंतु मदरसा दीनियात एकमात्र ऐसा मदरसा है, जिसकी स्थापना 1962 में हुई थी। पिछले 25 वर्षो से यह मदरसा मध्य प्रदेश राज्य बोर्ड से संबंधित था, लेकिन सन् 2008 से यह मध्यप्रदेश मदरसा बोर्ड से जुड़ गया है। मदरसा दीनियात फ़देहा की स्थापना 1999 में हुई थी। मदरसा बुशरा दारूल उलूम की स्थापना भी 1999 में हुई थी। मदरसा नैसेंट दीनियात 2002, मदरसा रहमानिया

1999 में और मदरसा फ़लाह दारैन दारूल उलूम 1990 में स्थापित हुआ था।

भोपाल में सहशिक्षा मदरसों की स्थापना तथा छात्रों का नामांकन निम्न सारणी में दर्शाया गया है -

क्रम संख्या	मदरसों के नाम	स्थापना का वर्ष	मार्च 2009 के अनुसार नामांकन		
			लड़के	लड़कियाँ	कुल
1	मदरसा दीनीयात	1962	50	75	125
2	मदरसा बुशरा				
	दारूल उलूम	1999	60	140	200
3	मदरसा				
	दीनीयात फ़ादेहा	1999	30	70	100
4	मदरसा रहमानिया	1999	80	160	240
5	फ़लाह दारैन				
	दारूल उलूम	1990	300	500	800
6	मदरसा नैसेन्ट दीनीयात	2002	75	75	150

उपरोक्त सूची में दर्शाए गए नामांकन से पता चलता है कि भोपाल के सभी सहशिक्षा मदरसों में लड़कों से अधिक लड़कियों की संख्या है। नामांकन के संबंध में इन मदरसों के सभी मुख्य शिक्षकों का यह कहना है कि छात्रों की संख्या में कमी और बढ़ोतरी होती रहती है, लेकिन लड़कियों की संख्या सदैव लड़कों से अधिक ही रहती है।

मदरसों का पाठ्यक्रम –

भोपाल के सभी सहशिक्षा मदरसों का पाठ्यक्रम मध्यप्रदेश मदरसा बोर्ड के पाठ्यक्रम पर आधारित है, अर्थात् मदरसों में मदरसा बोर्ड का ही पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। मदरसों का अपना कोई पाठ्यक्रम नहीं है। इसलिए धार्मिक शिक्षा भी निम्न स्तर तक ही दी जाती है। इस मदरसे के पाठ्यक्रम में कुरआन और हदीस के अतिरिक्त हिंदी, अँग्रेज़ी, उर्दू, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गृहविज्ञान, गणित तथा कंप्यूटर आदि विषय शामिल हैं। एक विशेष बात यह है कि भोपाल के सभी सहशिक्षा मदरसों में हिंदी माध्यम के अंतर्गत शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश राज्य बोर्ड की पुस्तकें भी मदरसा पाठ्यक्रम में शामिल हैं।

सूचियों का विश्लेषणात्मक विवरण

सर्वेक्षण के दौरान हमने जिन प्रश्नावलियों तथा साक्षात्कार सूचियों का छात्र/छात्राओं के लिए प्रयोग किया उनका विश्लेषण इस प्रकार है –

1. क्या आपकी आगे पढ़ने की इच्छा है?

इस प्रश्न के उत्तर में सभी छात्रों ने हाँ में उत्तर दिया। इससे पता चलता है कि मदरसों में शिक्षा ग्रहण करने वाले सभी 100 प्रतिशत बच्चे पढ़ने के इच्छुक हैं।

2. क्या आपके माता-पिता साक्षर हैं? यदि 'हाँ' तो उनका शैक्षिक स्तर क्या है?

इस प्रश्न से हमें पता चला कि मदरसे में पढ़ने वाले छात्रों की 25 प्रतिशत माताएँ पढ़ी हुई हैं और लगभग 32 प्रतिशत पिता पढ़े हुए है। जो माताएँ पढ़ी हुई हैं, उनमें से लगभग 12 प्रतिशत हाई स्कूल तक शिक्षित हैं तथा 12 प्रतिशत ने प्रारंभिक स्तर की शिक्षा ग्रहण की हुई है। इसी प्रकार 14 प्रतिशत पिता हाई स्कूल तक शिक्षित हैं, 10 प्रतिशत प्रारंभिक स्तर तक शिक्षित हैं तथा 8 प्रतिशत प्राथमिक स्तर तक हैं। लगभग 75 प्रतिशत माताएँ अशिक्षित हैं तथा 68 प्रतिशत पिता अशिक्षित हैं।

3. बड़े होकर आप कौन-सा कैरियर अपनाना चाहते हैं?

इस प्रश्न के उत्तर में लगभग 36 प्रतिशत बच्चे स्कूल शिक्षक बनना चाहते हैं, 16.5 प्रतिशत मोआल्लिमा या मौलवी बनना चाहते हैं, 14.5 प्रतिशत वकील बनना चाहते हैं, 5 प्रतिशत इंजीनियर बनना चाहते हैं, 10 प्रतिशत कंप्यूटर पेशेवर बनना चाहते हैं, 5 प्रतिशत डिज़ाइनर

बनना चाहते हैं। इस प्रकार हमें पता चला कि मदरसों में पढ़ने वाले बच्चे भी अपने भविष्य को लेकर काफ़ी जागरूक और उत्साहित हैं। परंतु अधिकांश लड़कियाँ मोआल्लिमा अथवा स्कूल शिक्षक ही बनना चाहती हैं। इससे हमें पता चलता है लड़कियाँ अभी इतनी जगरूक नहीं हुई हैं कि वे वकील, डॉक्टर या कोई अन्य तकनीकी कैरियर के बारे में सोचें।

4. आपके अनुसार आपके मकतब/मदरसे में शिक्षक तथा अन्य कर्मचारियों द्वारा किसे वरीयता दी जाती है?

इस प्रश्न के उत्तर में बच्चों का कहना है कि 52.5 प्रतिशत लड़कियों को तथा 37.5 प्रतिशत दोनों को प्रधानशिक्षक के द्वारा वरीयता दी जाती है, 10 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। शिक्षक के द्वारा 52.5 प्रतिशत लड़कियों को तथा 37. 5 प्रतिशत दोनों को वरीयता दी जाती है तथा 10 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। दफ्तरी कर्मचारियों के द्वारा 52.5 प्रतिशत लड़कों को तथा 37.5 प्रतिशत दोनों को वरीयता दी जाती है और 10 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस उत्तर से हम यह समझ सकते हैं कि मदरसों में लड़कियों के प्रति प्रधानशिक्षकों तथा शिक्षकों का विचार ठीक है, वे दोनों ही लड़कियों की वरीयता की बात करते हैं, परंतु दफ्तरी कर्मचारियों के संबंध में लड़कियों के प्रति हम लैंगिक विभिन्नता को देख सकते हैं।

5. क्या आपने कक्षा के दौरान शिक्षक द्वारा लड़कियों के प्रति भेदभाव का अनुभव किया है?

इस प्रश्न के उत्तर में 95 प्रतिशत ने उत्तर दिया कि उन्होंने शिक्षकों द्वारा लड़कियों के प्रति भेदभाव का अनुभव नहीं किया है तथा 5 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस उत्तर से हम यह समझ सकते हैं कि भोपाल के सभी सहशिक्षा मदरसे लैंगिक भेदभाव से मुक्त हैं।

6. आपके शिक्षण संस्थान में आपके या आपके किसी मित्र के साथ यदि कोई बदतमीज़ी/शोषण/दुर्व्यवहार की घटना हुई हो, तो उल्लेख करें?

इस प्रश्न के उत्तर में 30 प्रतिशत बच्चों ने नहीं कहा और 70 प्रतिशत बच्चों ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न का उत्तर यह दर्शाता है कि भोपाल के सभी सहशिक्षा मदरसों में छात्र और छात्राओं के साथ किसी प्रकार के शोषण तथा दुर्व्यवहार आदि की घटना कभी घटित नहीं हुई है। अत: इस संबंध में सहशिक्षा मदरसों का माहौल स्वच्छ प्रतीत होता है।

7. कक्षा के दौरान शिक्षक द्वारा लड़की और लड़के की कितनी बार प्रशंसा की जाती है?

इस प्रश्न के उत्तर में 87.5 प्रतिशत बच्चों (लड़कियों और लड़कों दोनों) ने कहा कि उनका कक्षा में एक से अधिक बार उत्साहवर्धन किया जाता है तथा 12.5 प्रतिशत

ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न के उत्तर से हम यह समझ सकते हैं कि मदरसों के बच्चों के साथ शिक्षकों द्वारा अच्छा व्यवहार किया जाता है।

8. शिक्षक द्वारा लड़कियों और लड़कों को कितनी बार दंडित किया जाता है?

इस प्रश्न के बारे में बच्चों ने कोई भी उत्तर नहीं दिया। इससे यह विदित होता है कि या तो बच्चे डरे हुए हैं या वे अपनी बात कहने में सक्षम नहीं हैं।

9. मकतब/मदरसे में खेलकूद, सांस्कृतिक, क्रियात्मक तथा अकादमिक गतिविधियों के दौरान शिक्षक द्वारा किसे (छात्र या छात्रा) विशेष सम्मान या वरीयता दी जाती है?

इस प्रश्न के उत्तर में 20 प्रतिशत लड़कियों के पक्ष में, 5 प्रतिशत लड़कों के पक्ष में, 65 प्रतिशत दोनों के पक्ष में शिक्षक द्वारा खेलकूद में वरीयता दी जाती है, 5 प्रतिशत ने कहा कि किसी को वरीयता नहीं दी जाती है तथा 5 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। सांस्कृतिक गतिविधियों में 5 प्रतिशत लड़कियों के पक्ष में, 22.5 प्रतिशत लड़कों के पक्ष में तथा 65 प्रतिशत दोनों को वरीयता दी जाती है, 5 प्रतिशत ने कहा कि किसी को वरीयता नहीं दी जाती है तथा 2.5 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। क्रियात्मक गतिविधियों के बारे में 5 प्रतिशत लड़कियों को, 22.5 प्रतिशत लड़कों को, 65 प्रतिशत दोनों को वरीयता दी जाती है, 2.5 प्रतिशत ने कहा कि किसी को वरीयता नहीं दी जाती है और 2.5 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। अकादमिक गतिविधियों में 22 प्रतिशत लड़कियों को, 5 प्रतिशत लड़कों को तथा 65 प्रतिशत दोनों को शिक्षक द्वारा वरीयता दी जाती है, 5 प्रतिशत ने कहा, 'कोई नहीं', अर्थात् किसी को वरीयता नहीं दी जाती है तथा 2.5 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न से हम यह समझ सकते हैं कि लड़कियों के संबंध में सांस्कृतिक तथा क्रियात्मक गतिविधियों के बारे में एक रूढ़िवादी मानसिकता बनी हुई है, केवल अकादमिक गतिविधियों के बारे में लड़कियों को 22.5 प्रतिशत प्राथमिकता दी जाती है, इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि छात्रों की दृष्टि में शिक्षकों की सोच के अनुसार लड़कियाँ शिक्षा के क्षेत्र में ही वरीयता प्राप्त कर सकती हैं।

10. आगंतुकों (मेहमानों) के घर आने पर चाय कौन बनाता है?

इस प्रश्न के उत्तर में 2.5 प्रतिशत बच्चों ने अपनी माँ को बताया कि मेहमानों के घर आने पर चाय बनाती हैं, 5 प्रतिशत बच्चों ने दोनों (लड़की और लड़का) को बताया, 15 प्रतिशत बच्चों ने कोई उत्तर नहीं दिया तथा 77.5 प्रतिशत बच्चों ने लड़कियों को बताया कि मेहमानों के घर आने पर चाय लड़कियाँ ही बनाती हैं। इस प्रश्न के उत्तर से हम यह समझ सकते हैं कि 77.5 प्रतिशत एक बड़ी संख्या है, जो रूढ़िवादी मानसिकता से ग्रस्त है, जो यह मानती है कि चाय बनाने का काम लड़कियों का है तथा उनको ही करना चाहिए। इस प्रकार

इस प्रश्न के उत्तर से हम लैंगिक भेदभाव को अच्छी तरह आँक सकते हैं।

11.क्या आप अपने घर-परिवार में लड़के-लड़कियों के मध्य किसी प्रकार के भेदभाव का अनुभव करते हैं?

इस प्रश्न के उत्तर में भोजन के बारे में 7.3 प्रतिशत बच्चों का उत्तर ''हाँ'' में था, 60.75 प्रतिशत बच्चों का उत्तर ''नहीं'' में था तथा 25 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस उत्तर से हम समझ सकते हैं कि कुछ घरों को छोड़कर लड़की और लड़के के बीच भोजन के बारे में भेदभाव नहीं होता है।

कपड़े के बारे में 75 प्रतिशत ने 'नहीं' कहा तथा 25 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। कपड़े के संबंध में भी यह प्रतीत होता है कि बहुधा परिवारों में लड़की और लड़के के मध्य भेदभाव नहीं होता है।

कॉपी और किताब का खर्च तथा ट्यूशन की फीस के प्रश्न के उत्तर में 10 प्रतिशत बच्चों ने 'हाँ' कहा, 40.75 प्रतिशत बच्चों ने 'नहीं' कहा तथा 35 प्रतिशत बच्चों ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न के उत्तर से भी हम यह समझ सकते हैं कि कुछ परिवारों को छोड़कर लड़की और लड़के के मध्य भेदभाव की भावना नहीं है।

खेलकूद के बारे में 30 प्रतिशत बच्चों का उत्तर 'हाँ' में था, 16.5 प्रतिशत बच्चों ने 'नहीं' में उत्तर दिया, 22.5 प्रतिशत ने कहा कि कभी-कभी भेदभाव होता है और 30 प्रतिशत बच्चों ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न के उत्तर से हम यह समझ सकते हैं कि खेलकूद के बारे में अधिकांश परिवारों में लड़की और लड़के के मध्य भेदभाव होता है। लड़कियों की तुलना में लड़कों को खेलकूद के बारे में प्राथमिकता दी जाती है।

पढ़ाई के अलग-अलग कमरे के प्रश्न पर 12.5 प्रतिशत बच्चों ने 'हाँ' कहा, 55 प्रतिशत बच्चों ने 'नहीं' कहा तथा 32.5 प्रतिशत बच्चों ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न के उत्तर से ऐसा प्रतीत होता है कि लड़की और लड़के के मध्य पढ़ाई के लिए अलग स्थान के संबंध में परिवारों के द्वारा भेदभाव नहीं किया जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि मदरसों में पढ़ने वाले कुछ बच्चों को छोड़कर बड़ी संख्या में बच्चे निर्धन परिवारों से ही होते हैं, जिनके घरों में पढ़ने के लिए अलग कमरों का प्रबंध नहीं होता है। अत: वे घरों में परिवार के साथ बैठकर ही अपनी पढाई करते हैं।

घरेलू कामकाज के बारे में 45 प्रतिशत का उत्तर 'हाँ' में था, 20 प्रतिशत का उत्तर 'नहीं' में था तथा 35 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न के उत्तर से हम पूर्ण रूप से परिवारों के द्वारा लड़की व लड़के के मध्य भेदभाव को समझ सकते हैं। अधिकांश परिवारों में यह रूढ़िवादी मानसिकता बनी हुई है कि घरेलू काम लड़कियों का है, उनको ही करना चाहिए तथा लड़के घरेलू कामकाज से स्वतंत्र हैं।

बाज़ार के कामकाज के बारे में 20 प्रतिशत बच्चों का उत्तर 'हाँ' में था, 45 प्रतिशत बच्चों का उत्तर 'नहीं' में था तथा 35 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न के उत्तर से ऐसा

प्रतीत होता है कि बाज़ार के कामकाज के बारे में लगभग आधे परिवारों में लड़की और लड़के को समानता दी जाती है परंतु कुछ परिवारों में भेदभाव भी किया जाता है।

मनोरंजन के अवसर अथवा टी.वी., सिनेमा के प्रश्न के उत्तर में 25 प्रतिशत बच्चों ने 'हाँ' में उत्तर दिया, 40 प्रतिशत ने 'नहीं' में उत्तर दिया तथा 35 प्रतिशत ने कोई नहीं दिया। इस प्रश्न के उत्तर से हम समझ सकते हैं कि 25 प्रतिशत परिवारों में मनोरंजन के प्रश्न पर भेदभाव होता है, परंतु 40 प्रतिशत भी एक बड़ी संख्या है, जिससे यह प्रतीत होता है कि इस संबंध में लड़की और लड़के के मध्य भेदभाव नहीं होता है।

पिकनिक अथवा बाह्य भ्रमण के बारे में 25 प्रतिशत बच्चों ने 'हाँ' कहा, 40 प्रतिशत बच्चों ने 'नहीं' कहा तथा 35 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न के उत्तर से हम यह समझ सकते हैं कि इस संबंध में अधिकतर परिवारों में लड़की और लड़के के मध्य भेदभाव नहीं होता है।

खरीदारी, बाह्य भ्रमण, सिनेमा, फिल्म देखना, कैरियर के चयन आदि प्रश्न के उत्तर के संबंध में 12.5 प्रतिशत बच्चों का उत्तर 'हाँ' में था, 37.5 प्रतिशत बच्चों का उत्तर 'नहीं' में था तथा 35 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न के उत्तर से हम समझ सकते हैं कि कुछ परिवारों में लड़की और लड़के के मध्य भेदभाव होता है तथा अधिकतर परिवारों में भेदभाव नहीं होता है।

निर्णय लेने की गतिविधियों में भागीदारी के प्रश्न के उत्तर में 25 प्रतिशत बच्चों ने 'हाँ' में उत्तर दिया, 42.5 प्रतिशत बच्चों ने 'नहीं' में उत्तर दिया, 2.5 प्रतिशत बच्चों ने कहा कि कभी-कभी भेदभाव होता है तथा 30 प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रश्न के उत्तर से हम यह समझ सकते हैं कि 25 प्रतिशत परिवारों में इस संबंध में भेदभाव नहीं होता है।

12. आँकड़ों की दृष्टि से इस प्रश्न को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(i) क्या आप इससे सहमत हैं कि शिक्षा प्रदान करने में लड़के-लड़कियों के मध्य भेदभाव होना चाहिए? क्या उनके खाने-पीने में भेदभाव होना चाहिए? क्या दोनों को समान दायित्व एवं ज़िम्मेदारियाँ दी जानी चाहिएँ?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर में 95 प्रतिशत बच्चों ने कहा कि इन संबंधों में लड़की और लड़के के

मध्य किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए तथा पाँच प्रतिशत ने कोई उत्तर नहीं दिया। उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर यह समझाता है कि लैंगिक विभेदीकरण के संबंध में मदरसों के छात्र लगभग रूढ़िवादी मानसिकता से स्वतंत्र हैं।

(ii) **क्या उनमें स्वतंत्रता प्रदान करने के सिलसिले में भेदभाव होना चाहिए? क्या उनके लिए खेलकूद का समय देने में भेदभाव होना चाहिए? क्या दोनो लिंगों के प्रति भेदभाव किया जाना मानवाधिकार का मुद्दा है?**

इन प्रश्नों के उत्तर में स्वतंत्रता, खेलकूद तथा मानवाधिकार के संबंध में 30 प्रतिशत बच्चों का मानना है कि दोनों लिंगों के मध्य भेदभाव होना चाहिए, जबकि 70 प्रतिशत बच्चों का मानना है कि इन संबंधों में दोनों लिंगों के मध्य भेदभाव नहीं होना चाहिए। अत: इन प्रश्नों का उत्तर काफ़ी हद तक रूढ़िवादी मानसिकता से स्वतंत्र है, परंतु 30 प्रतिशत भी स्वयं में बड़ी संख्या है, जो दोनों लिंगों के मध्य भेदभाव को स्वीकार भी करती है।

(iii) **क्या दोनों किसी कार्य को एक समान कर सकते हैं? क्या बच्चों के प्रति भेदभाव की प्रवृति के लिए मूल रूप से माता-पिता ही ज़िम्मेदार हैं? आपके अनुसार स्कूल या घर-परिवार में से लड़के-लड़कियों के प्रति भेदभाव के लिए मूल रूप से कौन ज़िम्मेदार हैं?**

इन प्रश्नों के उत्तर में 50 प्रतिशत बच्चे दोनों लिंगों के मध्य भेदभाव को स्वीकार करते हैं तथा यह भी मानते हैं कि घर, परिवार, माता और पिता तथा स्कूल के द्वारा भी दोनों लिंगों के मध्य भेदभाव की भावना पाई जाती है, जबकि 50 प्रतिशत बच्चे इस बात का निषेध करते हैं। इन प्रश्नों का उत्तर जितना रूढ़िवादी मानसिकता से स्वतंत्र है, उतना ग्रस्त भी है।

(iv) **क्या दोनों एक ही प्रकार के व्यवसाय अपना सकते हैं? क्या आदमी और औरत को समान वेतन दिया जाना चाहिए? क्या महिलाएँ बच्चों की देखरेख करने में पुरुषों से बेहतर होती है? क्या आज के समाज में आदमी और औरत के लिए हर क्षेत्र में समान अवसर उपलब्ध हैं?**

इन प्रश्नों के उत्तर में 95 प्रतिशत बच्चों का मानना है कि मर्द और औरत को समान वेतन देने के संबंध में भेदभाव नहीं होना चाहिए। घरेलू कामकाज में घर के सभी सदस्यों की

भागीदारी आवश्यक है तथा बच्चों की देखरेख करने में महिलाएँ पुरुषों से बेहतर होती हैं, जबकि 5 प्रतिशत बच्चे इन प्रश्नों के संबंध में नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। अत: इस प्रश्न का उत्तर लगभग रूढ़िवादी मानसिकता से स्वतंत्र है।

शिक्षा त्यागने (ड्रॉपआउट) के कारण -

यद्यपि सभी सहशिक्षा मदरसे प्रारंभिक स्तर तक ही हैं, परंतु उनमें बच्चों के ड्रॉपआउट की समस्या बनी हुई है। यूँ तो बच्चों के शिक्षा छोड़ने के कई कारण सामने आए हैं, लेकिन एक सबसे मुख्य कारण जो सभी मदरसों के शिक्षक तथा प्रधानाध्यापक मानते हैं, वह यह है कि बच्चों को निर्धनता के चलते अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। इसके अतिरिक्त माता-पिता में सामाजिक जागरूकता की कमी को बताया गया, जिसका प्रभाव लड़कियों की शिक्षा पर अधिक पड़ता है। इसके अतिरिक्त मदरसों के प्रधानाध्यापकों का कहना है कि जितने भी बच्चे मदरसों में शिक्षा ग्रहण करने आते हैं, उनमें से लगभग 80 प्रतिशत अपनी शिक्षा पूर्ण करके ही जाते हैं।

मूल्यांकन

इन मदरसों में सभी विषयों को समान रूप से पढ़ाया जाता है। मदरसा दीनियात फ़ादेहा में एक विशेष बात यह देखने को मिली कि मदरसे की दीवार पर शिवाजी से लेकर विभिन्न धर्मों तथा स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र लगे हुए थे। इस मदरसे को हम धर्मनिरपेक्षता का अनूठा उदाहरण कह सकते हैं। इसी प्रकार से अन्य मदरसों में भी हमें इस प्रकार की बातें देखने को मिलीं। चूँकि इन मदरसों में लड़कियों की संख्या अधिक है, इसलिए अधिकतर मदरसों में व्यावसायिक कोर्स भी करवाए जाते हैं। इन सभी उपरोक्त 6 मदरसों में फलाह दारैन दारूल उलूम और बुशरा दारूल उलूम मुख्य हैं तथा इनमें भी बुशरा दारूल उलूम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। मदरसा बुशरा दारूल के हस्तकौशल तथा अन्य व्यवसायिक कोर्सों में प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ से प्रशिक्षण कोर्स करने के बाद लड़कियों में आत्मविश्वास भी बढ़ता है, जो कि उनके सशक्तीकरण का एक साधन है।

उपरोक्त विशेषताओं के अलावा इन मदरसों में बहुत-सी कमियाँ भी हैं, जैसे- इन मदरसों में शिक्षकों का मासिक वेतन बहुत कम है। शिक्षकों को 300 रू॰ से लेकर अधिकतर 1000 रू. तक वेतन मिलता है। संसाधनों की दृष्टि से सभी मदरसों की स्थिति बहुत दयनीय है। अधिकांश मदरसे एक बड़े हॉल या अधिकतर दो-तीन कमरों में ही स्थित हैं। सभी मदरसों में शौचालयों की बहुत कमी है, जो कि लड़कियों के ड्रॉपआउट होने का कारण है। इसके अलावा बच्चों के खेलने की सुविधा मदरसा दीनियात के अलावा और कहीं भी नहीं है।

इन सब बातों के अतिरिक्त मदरसों को मदरसा बोर्ड तथा सर्वशिक्षा अभियान से कुछ शिकायतें भी हैं, जैसे कि सभी मदरसों के मुख्य शिक्षकों का कहना है कि मदरसा बोर्ड तथा सर्वशिक्षा अभियान की तरफ़ से सभी योजनाओं की सुविधाएँ नहीं मिल पाती हैं। सर्वशिक्षा अभियान की तरफ़ से केवल दो ही सुविधाएँ मिलती हैं एक पाठ्यपुस्तकों की, दूसरी मिड डे मील की। मदरसा बोर्ड तथा सर्वशिक्षा अभियान की ओर से कभी भी समय पर पाठ्यपुस्तकें नहीं मिल पाती हैं। नया सत्र अप्रैल से शुरू होता है तथा किताबें नवंबर के

महीने में मिलती हैं। इसी प्रकार बच्चों के लिए जो मिडडे मील आता है, वह खाने के योग्य नहीं होता है। उसमें एक-आध बार मरी हुई छिपकली भी निकल चुकी है। इस प्रकार इन मदरसों को मदरसा बोर्ड तथा सर्वशिक्षा अभियान की ओर से बहुत-सी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन मदरसों में पढ़ने वाले सभी बच्चे शिक्षा के प्रति सचेत हैं। अपने कैरियर के प्रति जागरूक हैं लेकिन लैंगिक मुद्दों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का अभी भी समाज में अभाव है। इससे यह भी स्पष्ट है कि छात्रों के परिवार की सोच लड़के और लड़कियों के मध्य भेदभाव करने में विश्वास रखती है। कुछ सीमा तक यह भी अनुभव किया गया कि इस संबंध में छात्र एवं छात्राओं की सोच भी सकारात्मक दृष्टि के अनुकूल कम ही है।

संदर्भ शब्दावली

मौलवी	शिक्षक
मोआल्लिमा	शिक्षिका
हदीस	प्रोफ़ेट मौहम्मद की शिक्षाएँ
उलूम(इल्म का बहुवचन)	विद्या, ज्ञान

विशिष्ट संदर्भ

- असगर अली इंजीनियर, *इस्लाम वुमेन एंड जेंडर जस्टिस,* ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 2001
- योगिंदर सिकंद, *बैस्टियन ऑफ द बिलहीवर्स: मदरसा एंड इस्लामिक एजुकेशन इन इंडिया,* पेंगिवन इंडिया, 2005
- एम.ज.विंकलमेन, *रीचिंग ऑफ द माइंडस ऑफ यंग मुस्लिम वुमेन गर्ल्स: मदरसा इन इंडिया,* मानक पब्लिकेशंस, 2005
- सुषमा जयरथ, मौ. नूर आलम, *मध्य प्रदेश के मकतब: एक नवीन स्वरूप,* प्राइमरी शिक्षक, जनवरी, 2009
- सुषमा जयरथ,मौ.नूरआलम, *मॉड्रेर्नाइज़ेशन ऑफ एम.पी. मदरसास एंड मकतबस* द मिली गज़ट, 1-15 जनवरी, 2009
- सुषमा जयरथ *'मदरसा एजुकेशन इन इंडिया: द जेंडर पर्सपेक्टिव पेपर प्रेज़ेन्टेड इन द नेशनल सेमीनार ऑन 'इक्विटी एंड एजुकेशन: पॉलिसी:इश्यूस एंड चैलेंजस ऑर्गेनाइज़ड बाई सेंट्रल इंस्ट्रिटयूट ऑफ एजुकेशन (सी.आई.ई.), दिल्ली यूनिवर्सिटी मार्च 5-7, 2009*

❑❑❑